अध्याय - 5

शब्द रचना

सन्धि

जब दो शब्द एक दूसरे के पास आ जाते हैं, तब पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि का जो मेल हो जाता है, उसे सन्धि कहते हैं । इससे एक नया शब्द बन जाता है । सन्धि तीन प्रकार की होती है – (क) स्वरसन्धि (ख) व्यंजनसन्धि (ग) विसर्ग सन्धि ।

इन संधियों के बारे में नीचे कुछ जानकारियाँ दी जा रही हैं –

(क) स्वरसन्धि –

दो स्वरों के मेल से स्वरसन्धि होती है । ये पाँच प्रकार की होती हैं– दीर्घ, गुण, वृद्धि यण और अयादि ।

(i) दीर्घ स्वर सन्धि :

दो सजातीय स्वर (अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ) मिलकर सजातीय दीर्घस्वर 'आ', 'ई' 'ऊ' 'ॠ' हो जाते हैं, जैसे –

उदाहरण

अ + अ = आ	देव + अधिदेव = देवाधिदेव
अ + आ = आ	पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

आ + अ = आ	परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय
इ + इ = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
इ + ई = ई	मुनि + ईश = मुनीश
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र
ई + ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश
उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश = गुरूपदेश
उ + ऊ = ऊ	सिंधु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
ऊ + उ = ऊ	स्वयंभू + उदय = स्वयंभूदय
ऋ + ऋ = ॠ	पितृ + ऋण = पितॄण

(ii) गुण स्वर सन्धि :

'अ'या 'आ' के बाद इ या ई होने पर दोनों मिलकर 'ए'; 'उ' या 'ऊ' होने पर दोनों मिलकर 'ओ'; तथा 'ऋ' होने पर दोनो मिलकर 'अर्' हो जाते हैं; जैसे –

अ + इ = ए	देव + इन्द्र = देवेन्द्र
अ + ई = ए	सुर + ईश = सुरेश
आ + इ = ए	महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश

अ + उ = ओ	सूर्य + उदय = सूर्योदय
अ + ऊ = ओ	समुद्र + उर्मि = समुद्रोर्मि
आ + उ = ओ	गंगा + उदक = गंगोदक
आ + ऊ = ओ	गंगा + उर्मि = गंगोर्मि
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

(iii) वृद्धि स्वर सन्धि :

अ या आ के बाद ए या ऐ आने पर दोनो मिलकर 'ऐ' तथा ओ या औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं; जैसे –

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक
अ + ऐ = ऐ	धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ओ = ओ	परम + ओजस्वी = परमौजस्वी
अ + औ = औ	परम + औषध = परमौषध
आ + ओ = ओ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी
आ + ओ = ओ	महा + औषध = महौषध

(iv) यण स्वर सन्धि :

'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' या 'ऋ' के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर इ या ई का 'य', उ या ऊ का 'व' तथा 'ऋ' का 'र' हो जाता है। जैसे –

इ + अ = य		यदि + अपि	= यद्यपि
इ + आ = या		इति + आदि	= इत्यादि
इ + उ = यु		प्रति + उपकार	= प्रत्युपकार
इ + ऊ = यू		नि + ऊन	= न्यून
इ + ए = ये		प्रति + एक	= प्रत्येक
इ + ऐ = यै		अति + ऐश्वर्य	= अत्यैश्वर्य
इ + ओ = यो		दधि + ओदन	= दध्योदन
इ + औ = यौ		मति + औदार्य	= मत्यौदार्य
ई + अ = य		देवी + अर्पण	= देव्यर्पण
ई + उ = यु		सखी + उक्ति	= सख्युक्ति
ई + ऊ = यू		नदी + ऊर्मि	= नद्यूर्मि
ई + ऐ = यै		देवी + ऐश्वर्य	= देव्यैश्वर्य
उ + अ = व		अनु + अय	= अन्वय
उ + आ = वा		सु + आगत	= स्वागत
उ + इ = वि		अनु + इति	= अन्विति

उ	+	ए	=	वे	अनु	+	एषण	=	अन्वेषण
ऊ	+	आ	=	वा	वधू	+	आगम	=	वध्वागम
ऋ	+	अ	=	र	पितृ	+	अनुमति	=	पित्रनुमति
ऋ	+	आ	=	रा	पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा
ऋ	+	इ	=	रि	मातृ	+	इच्छा	=	मात्रिच्छा

(v) अयाधि सन्धि :

ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आने पर 'ए' के स्थान पर 'अय्' ऐ के स्थान पर आय्, 'ओ' के स्थान पर 'अव्' तथा 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है, जैसे –

ए + अ = अय	ने + अन = नयन,	शे + अन = शयन
ऐ + अ = आय	नै + अक = नायक,	गै + अक = गायक
ओ + अ = अव	पो + अन = पवन,	भो + अन = भवन
औ + अ = आव	पौ + अक = पावक	पौ + अन = पावन
ओ + इ = अवि	पो + इत्र = पवित्र	
औ + इ = आवि	नौ + इक = नाविक	
औ + उ = आवु	भौ + उक = भावुक	

(ख) व्यंजनसन्धि –

व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को 'व्यंजनसंधि' कहते हैं। व्यंजन संधि के नियम नीचे दिए जा रहे हैं–

(i) क् च् ट् त् प् (अघोष) व्यंजनों के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण अथवा य्, र्, व् अथवा स्वर आये तो 'क्' का 'ग्' 'च्' का 'ज्', 'ट्' का 'ड्', 'त्' का 'द्', 'प्' का 'ब्' हो जाता है, जैसे –

दिक् + अम्बर	=	दिगम्बर	षट् + दर्शन	=	षड्दर्शन
दिक् + गज	=	दिग्गज	सत् + वाणी	=	सद्वाणी
वाक् + जाल	=	वाग्जाल	सत् + आनंद	=	सदानंद
अच् + अन्त	=	अजन्त	सुप् + अन्त	=	सुबन्त
अच् + आदि	=	अजादि	उत् + योग	=	उद्योग
षट् + आनन	=	षड़ानन	तत् + रूप	=	तद्रूप

(ii) क्, च्, ट्, त्, प्, के बाद नासिक्य व्यंजन (न्,म्) आए तो 'क्' का 'ङ्', 'च्' का 'ञ्', 'ठ्', का 'ण्', 'त्' का 'न्', 'प्' का 'म्' हो जाता है, जैसे –

प्राक् + मुख	=	प्राङ्मुख	सत् + मार्ग	=	सन्माग
वाक् + मय	=	वाङ्मय	जगत् + नाथ	=	जगन्नाथ
षट् + मुख	=	षण्मुख	उत् + नति	=	उन्नति
षट् + मार्ग	=	षण्मार्ग	अप् + मय	=	अम्मय

(iii) 'म्' के बाद वर्गीय व्यंजन आने पर 'म्' के स्थान पर इसी वर्ग का 'नासिक्य व्यंजन'या 'अनुस्वार' हो जाता है; किन्तु 'य्', 'र्', 'ल्' 'व्' 'श्', 'ष्','ह', आने पर अनुस्वार ही होता है, जैसे –

सम्	+	कल्प	=	संकल्प/सङ्कल्प		सम्	+	यम	=	संयम
सम्	+	गम	=	संगम/सङ्गम		सम्	+	रचक	=	संरचक
सम्	+	तोष	=	संतोष/सन्तोष		सम्	+	लाप	=	संलाप
सम्	+	पूर्ण	=	संपूर्ण/सम्पूर्ण		सम्	+	वाद	=	संवाद
किम्	+	चित्	=	किंचित/किञ्चित		सम्	+	सार	=	संसार
पम्	+	चम	=	पंचम/पञ्चम		सम्	+	हार	=	संहार

(iv) 'त्' या 'द्' के बाद च/छ, ज/झ, ट/ठ, ड/ढ, ल आए तो त् या द् के स्थान पर क्रमशः च्, ज्, ट्, ड्, ल् हो जाता है, जैसे–

उत्	+	चारण	=	उच्चारण		सत्	+	जन	=	सज्जन
उत्	+	छेद	=	उच्छेद		वृहत्	+	टीका	=	वृहट्टीका
उत्	+	डयन	=	उड्डयन		तत्	+	लीन	=	तल्लीन
उत्	+	लास	=	उल्लास		उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल
उत्	+	लेख	=	उल्लेख		विद्युत्	+	छटा	=	विद्युच्छटा

(v) 'त' या 'द' के बाद 'ह' आए तो दोनों मिलकर द्ध हो जाते हैं, जैसे–

उत् + हार = उद्धारउत् + हत = उद्धत

उत् + हरण = उद्धरण तत् + हित = तद्धित

(vi) 'त्' या 'द्' के बाद 'श' आए तो दोनों मिलकर 'च्छ' हो जाते है; जैसे–

उत् + शृंखल	=	उच्छृंखल	उत् + श्वास	=	उच्छ्वास
उत् + शिष्ट	=	उच्छिष्ट	सत् + शास्त्र	=	सच्छात्र

(vii) स्वर के बाद 'छ' आए तो 'छ' 'च्छ' हो जाता है; जैसे–

आ + छादन	=	आच्छादन	वि + छेद	=	विच्छेद
परि + छेद	=	परिच्छेद	अनु + छेद	=	अनुच्छेद

(viii) ऋ, र्, ष् के बाद 'न' आए तो 'न' का 'ण' हो जाता है, जैसे-

ऋ + न	=	ऋण	हर् + न	=	हरण
कृष् + न	=	कृष्ण	विष् + नु	=	विष्णु
तृष् + ना	=	तृष्णा	भूष् + अन	=	भूषण

(ix) श्/ष् के बाद त या थ आए तो 'त' का 'ट' और 'थ' का 'ठ' हो जाता है; जैसे-

आकृष् + त	=	आकृष्ट	इष् + त	=	इष्ट
षष् + थ	=	षष्ठ	तुष + त्	=	तुष्ट
पृष् + थ	=	पृष्ठ	नश् + त्	=	नष्ट

(ग) विसर्गसन्धि –

विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे 'विसर्गसन्धि' कहते हैं। विसर्गसंधि के नियम नीचे दिए जा रहे हैं–

(i) विसर्ग (:) के बाद च/छ आए तो विसर्ग के स्थान पर 'श', ट/ठ आए तो 'ष', त/थ आए तो 'स' हो जाता है; जैसे -

निः	+	चल	=	निश्चल	मनः	+	ताप	= मनस्ताप
निः	+	छल	=	निश्छल	निः	+	तेज	= निस्तेज
धनु	+	टंकार	=	धनुष्टंकार	निः	+	तार	= निस्तार
निः	+	ठुर	=	निष्ठुर	दुः	+	तर	= दुस्तर

(ii) अः के बाद वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह्, आए तो अः का 'ओ' हो जाता है; जैसे -

अधः	+	गति	=	अधोगति	यशः	+	दा	= यशोदा
सरः	+	ज	=	सरोज	मनः	+	रथ	= मनोरथ
तेजः	+	मय	=	तेजोमय	मनः	+	योग	= मनोयोग
वयः	+	वृद्ध	=	वयोवृद्ध	मनः	+	रंजन	= मनोरंजन
अधः	+	भाग	=	अधोभाग	पुरः	+	हित	= पुरोहित

(iii) 'इ':, या 'उ': के बाद 'र' आए तो इः का 'ई' और 'उ': का 'ऊ' हो जाता है, जैसे–

निः	+	रव	=	नीरव	निः	+	रोग	= नीरोग
निः	+	रस	=	नीरस	दुः	+	राज	= दूराज

(iv) विसर्ग के बाद कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण या य, ल, व, ह आए तो विसर्ग के स्थान पर ‘र्’ हो जाता है, जैसे-

दुः + आत्मा = दुरात्मा	पुनः + अपि = पुनरपि
निः + उपाय = निरुपाय	पुनः + आगत = पुनरागत
निः + गुण = निर्गुण	पुनः + मिलन = पुनर्मिलन
निः + झर = निर्झर	आशीः + वाद = आशीर्वाद
अन्तः + विरोध = अन्तर्विरोध	निः + जल = निर्जल

(v) ‘इ’: या ‘उ’: के बाद ‘क’/‘ख’ आए तो विसर्ग के स्थान पर ‘ष’ हो जाता है; जैसे –

निः + कपट = निष्कपट	निः + पाप = निष्पाप
दुः + कर = दुष्कर	चतुः + कोण = चतुष्कोण
दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति	निः + फल = निष्फल

(vi) विसर्ग के बाद ‘त’ या ‘स’ आए तो विसर्ग का ‘स’ हो जाता है; जैसे –

नमः + ते = नमस्ते	निः + सन्तान = निस्सन्तान
निः + तार = निस्तार	दुः + साहस = दुस्साहस
निः + सन्देह = निस्सन्देह	निः + सार = निस्सार

(vii) विसर्ग के पूर्व अ/आ हो तथा बाद में कोई भिन्न स्वर आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे – अत: + एव = अतएव

(viii) 'अ:' के बाद क/ख प/फ आए तो विसर्ग ज्यों-का-त्यों रहता है, जैसे–

अन्त:	+	करण	=	अन्त:करण	अध:	+	पतन	=	अध:पतन
अन्त:	+	पुर	=	अन्त:पुर	प्रात:	+	काल	=	प्रात:काल
मन:	+	कल्पित	=	मन:कल्पित	पुन:	+	फलित	=	पुन:फलित

अभ्यास

1. संधि किसे कहते हैं ?

2. संधियाँ कितने प्रकार की होती हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए ।

3. नीचे दी गयी संधियों का विच्छेद कीजिए :

निश्चल, निष्पाप, महीन्द्र, गुरूपदेश, पत्राचार, पुरुषोत्तम, जगन्नाथ, नीलाचल, देवर्षि, मन्वन्तर, पित्रादेश, सदैव, उज्ज्वल, उद्घाटन, सदानन्द ।

4. **नीचे दिए गए पदों की संधि कीजिए :**

षट्	+	मास	परम	+	अर्थ	अनु	+	अय
तप:	+	वन	राजा	+	ऋषि	महा	+	उत्सव
भौ	+	उक	गण	+	ईश	सत्	+	जन
धनु:	+	टंकार	सम्	+	वाद	मन:	+	ताप
नि:	+	आशा	उत्	+	हार	तथा	+	एव

समास

समास का अर्थ है– सम् (पास्) + आस (बिठना) । अर्थात् दो स्वतंत्र शब्दों के पास-पास बिठाने को समास कहते हैं । समास-प्रक्रिया में बने यौगिक शब्द को समासिक पद, समस्तपद, समासपद समासयुक्त शब्द या समासज पद कहते हैं । समासज पद को अलग-अलग करने की रीति को समास विग्रह या विग्रह कहते हैं । विग्रह के समय दो शब्दों के बीच में कारक चिह्न या पारस्परिक संबंधसूचक शब्द का प्रयोग होता है । समासज पद में इसका लोप हो जाता है ।

समास के चार भेद हैं –

(i) अव्ययीभाव (ii) तत्पुरुष (कर्मधारय और द्विगु इसके अंतर्गत हैं ।)

(iii) द्वन्द्व (iv) बहुव्रीहि

(i) अव्ययीभाव समास –

इस समास में पूर्वपद अव्यय या उपसर्ग होता है । समस्तपद क्रियाविशेषण (अव्यय) का काम करता है । संज्ञाशब्दों की आवृत्ति से भी अव्ययीभाव समास होता है ।

उदाहरण

समासविग्रह		**समासज पद**	**समासविग्रह**		**समासज पद**
शक्ति के अनुसार	=	यथाशक्ति	रात ही रात में	=	रातोंरात
प्रत्येक दिन	=	प्रतिदिन	पहेल पहले	=	पहलेपहल
जीवन तक	=	आजीवन	साल साल	=	हरसाल

जीवन पर्यन्त	=	यावज्जीवन	शक के बिना	=	बेशक
सन्देह के बिना	=	निस्सन्देह	पेटभर कर	=	भरपेट

(यथाशक्ति, यथासंभव, प्रतिपल, प्रतिव्यक्ति, आमरण, आजन्म, लापता, लाजवाब, लाइलाज, अनजाने, निघड़क, बेखटके, हररोज, निडर, सहर्ष, एकाएक, हाथोंहाथ, बीचोंबीच, गाँवगाँव, धीरेधीरे)

(ii) तत्पुरुष समास –

इस समास में उत्तरपद प्रधान होता है, पूर्वपद गौण होता है । उत्तरपद संज्ञा और पूर्वपद विशेषण होता है । विग्रह करते समय शब्दों के बीच कारक चिह्न - को, से, के लिए, का/के/की, में, पर आदि लगते हैं । समासज शब्द में कारक-चिह्न का लोप हो जाता है । कारक-चिह्नों के आधार पर इसके छह भेद होते हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष : इसमें 'को' का लोप हे जाता है; जैसे -

स्वर्ग को प्राप्त	=	स्वर्गप्राप्त
शरण को आगत	=	शरणागत
चिडियों को मारनेवाला	=	चिड़ीमार
परलोक को गमन	=	परलोकगमन
गगन को चूमनेवाला	=	गगनचुम्बी
हस्त को प्राप्त हुआ	=	हस्तगत
शरण को आगत	=	शरणागत

सबको जाननेवाला	=	सर्वज्ञ
काठ को फोड़नेवाला	=	काठफोड़

(गृहागत, मुँहतोड़, दिवंगत, देशगत, आशातीत)

(ii) करण तत्पुरुष : इसमें से/के द्वारा का लोप हो जाता है; जैसे –

गुणों से युक्त	=	गुणयुक्त	मुँह से माँगा	=	मुँहमाँगा
आग से जला	=	आगजला	शोक से आकुल	=	शोकाकुल
ईश्वर के द्वारा प्रदत्त	=	ईश्वरप्रदत्त	मन से माना हुआ	=	मनमाना
हस्त से लिखित	=	हस्तलिखित	अकाल से पीड़ित	=	अकालपीड़ित

(गुरुदत्त, रेखांकित, भूखमरा, तुलसीकृत, प्रेमातुर, मदांध, धनहीन)

(iii) सम्प्रदान तत्पुरुष : इसमें 'के लिए' का लोप हो जाता है; जैसे –

रसोई के लिए घर	=	रसोईघर	देश के लिए भक्ति	=	देशभक्ति
राह के लिए खर्च	=	राहखर्च	बलि के लिए पशु	=	बलिपशु
डाक के लिए गाड़ी	=	डाकगाड़ी	आराम के लिए कुर्सी	=	आराम कुर्सी
गुरु के लिए दक्षिणा	=	गुरुदक्षिणा	हवन के लिए सामग्री	=	हवनसामग्री

(कृष्णार्पण, गोशाला, मार्गव्यय, राज्यलिप्सा, यज्ञवेदी, स्वदेशप्रेम)

(iv) अपादान तत्पुरुष : इसमें 'से' का लोप हो जाता है; जैसे –

बंधन से मुक्त	=	बंधनमुक्त	जन्म से अंध	=	जन्मांध
पथ से भ्रष्ट	=	पथभ्रष्ट	देश से निकाला	=	देशनिकाला

पद से च्युत	=	पदच्युत	जाति से भ्रष्ट	=	जातिभ्रष्ट
धर्म से विमुख	=	धर्मविमुख	भय से भीत	=	भयभीत

(ऋणमुक्त, ज्ञानमुक्त, गुणहीन, आकाशपतित, पदमुक्त, लक्ष्यभ्रष्ट)

(v) सम्बन्ध तत्पुरुष : इसमें का / की / के का लोप हो जाता है; जैसे -

सेना का पति	=	सेनापति	राजा की सभा	=	राजसभा
कर्ण के फूल	=	कर्णफूल	जल की धारा	=	जलधारा
घोड़ों की दौड़	=	घुड़दौड़	सिर का दर्द	=	सिरदर्द
अमृत की धारा	=	अमृतधारा	आम का चूर	=	अमचूर

(रामानुज, गंगातट, देवमूर्त्ति, भारतवासी, भातृस्नेह, लोकतंत्र, राष्ट्रपति)

(vi) अधिकरण तत्पुरुष : इसमें में/पर का लोप हो जाता है; जैसे–

जल में मग्न	=	जलमग्न	अपने पर बीती	=	आपबीती
कवियों में राजा	=	कविराज	घोड़े पर सवार	=	घुडसवार
डिब्बे में बन्द	=	डिब्बाबंद	नरों में श्रेष्ठ	=	नरश्रेष्ठ
वन में वास	=	वनवास	गृह में प्रवेश	=	गृहप्रवेश

(कलाप्रवीण, पुरुषोत्तम, निशाचर, धर्मवीर, शास्त्रप्रवीण, प्रेमनिमग्न)

इनके अतिरिक्त तत्पुरुष समास के और पाँच भेद हैं; जैसे-

(क) उपपद तत्पुरुष (ख) मध्यपदलोपी तत्पुरुष (ग) तत्पुरुष

(घ) कर्मधारय तत्पुरुष (ङ) द्विगु तत्पुरुष

(क) उपपद तत्पुरुष : इस समास का उत्तरपद क्रिया से बना हुआ कृदंत होता है; जैसे–

दिवा (दिन) को करनेवाला	=	दिवाकर
शम् (शांति) को करनेवाला	=	शंकर
कुंभ को करने वाला	=	कुंभकार
व्योम (आकाश) में गमन करने वाला	=	विहंगम
उर से गमन करने वाला	=	उरग
पंक में जन्म लेने वाला	=	पंकज
कान को काटने वाला	=	कनकटा
पय को देने वाला	=	पयोद

(ख) मध्यपदलोपी तत्पुरुष : इसमें पूर्व और उत्तर पद के बीच कारक चिह्न सहित सारे पद लुप्त हो जाते हैं; जैसे –

पवन से चलनेवाली चक्की	=	पवनचक्की
वन में रहनेवाला मानुष	=	वनमानुष
तुला में बराबर दिया जानेवाला दान	=	तुलादान
बैलों से चलेनवाली गाड़ी	=	बैलगाड़ी
गोबर से बना गणेश	=	गोबरगणेश
घृत से मिश्रित अन्न	=	घृतान्न
पर्णों से निर्मित शाला	=	पर्णशाला
गुरु के संबंध से भाई	=	गुरुभाई

(ग) नञ् तत्पुरुष : निषेध या अभाव के अर्थ में पूर्वपद 'न' के स्थान पर 'अ' या 'अन्' हो जाता है; जैसे –

न आचार = अनाचार	न पूर्ण = अपूर्ण
न आश्रित = अनाश्रित	न संभव = असंभव
न आगत = अनागत	न योग्य = अयोग्य
न भाव = अभाव	न हित = अहित

(घ) कर्मधारय तत्पुरुष : इसमें दोनों पदों के बीच विशेषण - विशेष्य (संज्ञा) का संबंध होता है अथवा उपमान-उपमेय का संबंध होता है; जैसे -

विशेषण -विशेष्य (संज्ञा)

महान् राजा = महाराजा	नीली गाय = नीलगाय
शुभ आगमन = शुभागमन	सत् जन = सज्जन
अंध विश्वास = अंधविश्वास	महान् ऋषि = महर्षि
पीत अम्बर = पीताम्बर	श्याम सुन्दर = श्यामसुन्दर

(सत्संगति, उच्चशिखर, नीलगगन, नीलकंठ, कालापानी, लघुमानव)

उपमान- उपमेय के आधार पर कर्मधारय तत्पुरुष समास के तीन उपभेद किये जा सकते हैं–

(i) उपमान कर्मधारय (ii) उपमित (उपमेय) कर्मधारय (iii) रूपक कर्मधारय

(i) **उपमान कर्मधारय** : इसमें जिससे उपमा दी जाय वह पहले रहता है तथा जिसकी उपमा दी जाय वह बाद में । इन दोनों पदों के बीच आने वाले के समान, की तरह, जैसा/जैसे/जैसी का लोप हो जाता है; जैसे –

विद्युत् जैसी चंचला	=	विद्युच्चंचला
घन की तरह श्याम	=	घनश्याम
चन्द्र के समान मुख	=	चन्द्रमुख
कमल जैसे नयन	=	कमलनयन

(ii) **उपमित कर्मधारय** : इसमें उपमेय पूर्वपद और उपमान उत्तरपद होता है; जैसे–

नर सिंह के समान	=	नरसिंह
अधर पल्लव के समान	=	अधरपल्लव

(iii) **रूपक कर्मधारय** : इसमें उपमेय को ही उपमान कह दिया जाता है, अर्थात् एक पर दूसरे का आरोप कर दिया जाता है; जैसे –

मुख ही है चन्द्र	=	मुखचन्द्र
विद्या ही रत्न	=	विद्यारत्न
ज्ञान रूपी अमृत	=	ज्ञानामृत
देह रूपी लता	=	देहलता

(ङ) **द्विगु तत्तपुरुष** : इसमें पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण होता है और उत्तरपद संज्ञा । पूरा पद समूह का बोध कराता है; जैसे –

तीन लोकों का समूह	=	त्रिलोक
पाँच वटों का समाहार	=	पंचवटी
सप्त सिंधुओं का समूह	=	सप्तसिंधु
दो पहरों का योग	=	दोपहर

(चौराहा, षड्ऋतु, सप्तपदी, इकन्नी, नवग्रह, सतसई, नवनिधि)

(iii) द्वन्द्व समास –

इस समास में दोनों या तीनों पद समान होते हैं। इन पदों के बीच आनेवाला और/या लुप्त हो जाता है; जैसे –

माँ और बाप	=	माँ-बाप
माता और पिता	=	मातापिता
अन्न और जल	=	अन्नजल
आज और कल	=	आजकल
आगा और पीछा	=	आगापीछा
सुख और दुःख	=	सुखदुःख
धर्म या अधर्म	=	धर्माधर्म
पाप और पुण्य	=	पापपुण्य

(बापदादा, राजा-रानी, आचार-विचार लोटा-डोरी, दाल-भात)

(iv) बहुव्रीहि समास –

इस समास में पूर्वपद या उत्तरपद कोई भी प्रधान नहीं होता । सामासिक पद तीसरेपद (संज्ञा) का विशेषण बन जाता है और उसीका अर्थ भी देता है, जैसे–

दस आननवाले/दस आनन हैं जिसके	=	दशानन (रावण)
लम्बे उदरवाले / लम्बा उदर है जिसका	=	लम्बोदर (गणेश)
पीत अम्बरवाले/पीत अम्बर है जिसका	=	पीताम्बर (कृष्ण)
चक्र धारण करने वाले / चक्र हाथ में है जिसके	=	चक्रधर (विष्णु)
नीलकण्ठवाले / नील कंठ है जिसका	=	नीलकण्ठ (महेश्वर/शिव)
शांत चित्तवाला / शांत है चित्त जिसका	=	शान्तचित्त
बारह सींगोंवाला / बारह सींग हैं जिसके	=	बारहसिंगा
फटे कानवाला /फटे हैं कान जिसके	=	कनफटा

(कमलनैन, अंशुमाली, वीणापाणि)

अभ्यास

1. समास कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम लिखिए और प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए ।

2. **निम्नलिखित सामासिक शब्दों का विग्रह कीजिए–**

   दुखार्त्त, विधानसभा, पददलित, भरपेट, ॠणमुक्त, श्रमदान, गृहप्रवेश, त्रिगुण, महाकाव्य, देशान्तर, घृतान्न, घनश्याम, चतुरानन, नाक-कान, पापपुण्य, सीताराम, भलाबुरा, विद्यासागर, चतुरानन ।

3. निम्नलिखित शब्दों को मिलाकर सामासिक शब्द बनाइए और उस समास का नाम भी बताइए :

दश हैं आनन जिसके, मरणपर्यन्त, नरसिंह के समान, अन्य ग्राम, चरण कमल के समान, चार राहों का समाहार, कुंभ को करनेवाला, दिक् हैं अम्बर जिसका, भात और दाल, ग्राम का उद्धार, महान्‌बली, जल से जात ।

4. 'क' स्तंभ के समासों के साथ 'ख' स्तंभ के सामासिक पदों का मिलान कीजिए –

'क' स्तंभ	**'ख' स्तंभ**
उपमित कर्मधारय	मुखचन्द्र
द्विगु	मरणोत्तर
करण तत्पुरुष	मनमाना
अव्ययीभाव	महापुरुष

●

उपसर्ग

भाषा में नए शब्दों का निर्माण करने के लिए शब्द के पहले जो शब्दांश जोड़े जाते है, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं। ये जिस शब्द से जुड़ते हैं, उसे एक नया अर्थ देते हैं। 'हार' शब्द के पहले जुड़नेवाले निम्न उपसर्गों को देखिए –

आहार (भोजन / खाना), संहार (नाश), प्रहार (मार) विहार (सैर), परिहार (त्याग) उपहार (भेंट), प्रत्याहार (लैटा लेना)

हिन्दी में ये उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं –

(क) संस्कृत उपसर्ग (ख) हिन्दी उपसर्ग (ग) उर्दू (अरबी/फारसी से आए उपसर्ग)

इनमें से कुछ मुख्य उपसर्ग दिए जा रहे हैं –

(क) संस्कृत उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
अति	अधिक/बहुत, परे	अतिशय, अतिक्रम, अत्याचार, अत्यंत, अतिरिक्त, अत्युक्ति
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अध्यक्ष, अधिपति, अधिकार, अध्यादेश,अधिकृत
अनु	पीछे, प्रत्येक, समान	अनुगामी, अनुचर, अनुकूल, अनुसार, अनुरूप, अनुराग, अनुशासन, अनुताप,
अप	हीनता, बुरा, अभाव	अपकार, अपकीर्त्ति, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपयश, अपव्यय
अभि	सामने, निकट, ओर	अभिशाप, अभिमान, अभिलाषा, अभ्यागत, अभिवादन, अभिभाषण, अभिनय,
अव	नीचे, हीन	अवगुण, अवकाश, अवनति, अवज्ञा, अवतरण, अवमान, अवतीर्ण
आ	तक, समेत	आजन्म, आशंका, आदान, आकर्षण, आक्रमण, आजीवन, आमरण, आरक्त

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
उत् उद्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्तम, उत्कर्ष, उन्नति, उत्कण्ठा, उद्योग, उद्भव,उल्लास
उप	निकट, समान, सहायक	उपदेश, उपचार, उपकार, उपस्थित, उपवन, उपमंत्री, उपनाम
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्गुण, दुराचार, दुरवस्था, दुष्कर्म, दुस्सह
प्र	अच्छा, उत्कृष्ट, आगे	प्रणाम, प्रबंध, प्रशान्ति, प्रगति, प्रयोग
परा	पीछे, उल्टा	पराजय, परामर्श, पराभव, पराक्रम
सु	अच्छा, सहज	सुदूर, सुकर्म, सुगम, सुपुत्र, सुयश
निर्	नहीं, निषेध, बिना	निर्जन, निरादर, निर्दोष, निष्काम, निश्चल

(ख) हिन्दी उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
अ	निषेध, अभाव	अमोल, अथाह, अलग, अचेत, अछूत, अपढ़, अजान, अटल
अध	आधा	अधकचरा, अधमरा, अधजला, अधपका, अधखिला, अधजमा, अधबना
अन	निषेध, अभाव	अनजान, अनपढ़, अनकहा, अनहोनी, अनमना, अनमोल, अनबन, अनगिनत
उन	एक कम्	उनतीस, उनतालीस, उनसठ, उनचास
औ	हीन, निषेध	औगुन, औढ़र, औघट, औसर
क/कु	बुरा, हीन	कपूत, कुठौर, कुपात्र, कुमार्ग, कुरूप, कुचाल, कुपुत्र, कुदेश
स/सु	श्रेष्ठ, सुन्दर	सपूत, सुघड़, सुडौल, सुजान, सचेत, सजग
दु	बुरा, हीन	दुबला, दुकाल, दुस्वप्न
नि	निषेध, अभाव	निकम्मा, निडर, निहत्था, निधड़क, निठल्ला, निपूता
बिन	बिना, निषेध	बिनबात, , बिनकहे, बिनमाँगा, बिनदेखा, बिनचाहा, बिनकाम, बिनबिका
भर	पूर्ण, पूरा	भरपेट, भरपूर, भरमार, भरसक, भरपाई

(ग) उर्दू उपसर्ग :

उपसर्ग	अर्थ	कुछ उदाहरण
कम	थोड़ा, हीन	कमअक्ल, कमजोर, कमसमझ, कमउम्र, कमख्याल
खुश	अच्छा	खुशबू, खुशखबरी, खुशमिजाज, खुशहाल, खुशनसीब, खुशकिस्मत
गैर	भिन्न, विरुद्ध	गैरहाजिर, गैरजिम्मेदार, गैरकानूनी, गैरवाकिफ, गैरमुनासिब
ना	कम, अभाव	नाचीज, नादान, नाराज, नालायक, नापसंद,नासमझ, नाजायज
बद	बुरा	बदनाम, बदबू, बदहजमी, बदख्याल, बदतमीज, बदमिजाज
बा	साथ	बाकायदा, बाइज्जत, बाइंसाफ, बाअदब, बातमीज
बे	बिना	बेईमान, बेहोश, बेकसूर, बेमन, बेचारा, बेइज्जती, बेअदब
ला	बिना	लापता, लापरवाह, लावारिस, लाजवाब, लाइलाज, लाचार
सर	मुख्य	सरपंच, सरताज, सरदार
हम	समान, साथ	हमशक्ल, हमउम्र, हमदर्द, हमराही, हमसफर, हमदम
हर	प्रत्येक	हररोज, हरघड़ी, हरदम, हरएक, हरकोई, हरसाल

प्रत्यय

नए शब्दों का निर्माण करने के लिए जो शब्दांश शब्द के बाद जोड़े जाते हैं, उन्हें 'प्रत्यय' कहते हैं । ये जिन शब्दों से जुड़ते हैं, उन्हें नए अर्थ देते हैं; जैसे-

मूर्ख (व्यक्ति के लिए), मूर्खता (व्यक्ति का गुण-भाववाचक)

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं - (i) कृत् प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय

(i) कृत्प्रत्यय : ये धातु के बाद लगते हैं । इनसे बने शब्दों को कृदन्त कहते हैं । ऐसे शब्द 'संज्ञा' या 'विशेषण' होते हैं ।

(ii) तद्धित प्रत्यय : ये संज्ञा / सर्वनाम /विशेषण / अव्यय के बाद लगते हैं । इनसे बने शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं । ऐसे शब्द संज्ञा या विशेषण होते हैं ।

हिन्दी प्रत्यय 'कृत्' हों या 'तद्धित' तीन स्रोतों से आए हैं– संस्कृत, हिन्दी, उर्दू (अरबी-फारसी)

(i) कृत् प्रत्यय

- **संस्कृत के कृत् प्रत्यय**

प्रत्यय	**मूलधातु**	**कुछ उदाहरण (संज्ञा / विशेषण)**
अ	सृप, दिव्, चर्	सर्प, देव, चर
अक	कृ, गै, पठ्	कारक, गायक, पाठक
अन	पठ्, भुज्, शृ	पठन, भोजन, श्रवण
अनीय	गम्, दृश्, रम्, पठ्	गमनीय, दर्शनीय, रमणीय, पठनीय
आ	पूज्, शिक्ष	पूजा, शिक्षा
त(क्त)	कृ, मृ, विद्, शृ	कृत, मृत, विदित, श्रुत
तव्य	कृ वच्	कर्त्तव्य वक्तव्य
य	गम्, खा, पूज	गम्य, खाद्य, पूज्य

- **हिंन्दी / उर्दू के कृत् प्रत्यय**

प्रत्यय	मूलधातु	कुछ उदाहरण (संज्ञा विशेषण)
अंत	रट, भिड़	रटंत, भिडंत
अक्कड़	भी, भूल, घूम	पियक्कड़, भुलक्कड़, घुमक्कड़
आ	घट, झूल, ठेल	घाटा, झूला, ठेला
आन	उठ, उड़, मिल	उठान, उड़ान, मिलान
आव	बच, बह, लग	बचाव, बहाव, लगाव
आवट	बन,लिख, सज	बनावट, लिखावट, सजावट
आवा	देख, पछता, बोल	दिखावा, पछतावा, बुलावा
आई	चढ़, पढ़, लड़	चढ़ाई, पढ़ाई, लड़ाई
आऊ	कमा, टिक, बिक	कमाऊ, टिकाऊ, बिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	उड़, लड़	उड़ाका, लड़ाका
आकू	लड़	लड़ाकू
आड़ी	खेल	खिलाड़ी
आलू	झगड़, लजा, शरमा	झगड़ालू, लजालू , शरमालू
आवना	डर, लुभा	डरावना, लुभावना
आहट	खुजला, घबरा, चिल्ला	खुजलाहट, घबराहट,चिल्लाहट
इया	घट, बढ़	घटिया, बढ़िया
इयल	अड़, मर, सड़	अडियल, मरियल, सड़ियल
ई	धमक, बोल, हँस	धमकी, बोली, हँसी

प्रत्यय	मूलधातु	कुछ उदाहरण (संज्ञा विशेषण)
ऊ	कमा, खा, झाड़	कमाऊ, खाऊ, झाड़ू
एरा	बस, लूट	बसेरा, लुटेरा
औटी	कस	कसौटी
औता	समझ	समझौता
औती	कट, मान, चुन	कटौती, मनौती, चुनौती
त	खप, बच	खपत, बचत
ती	घट, चढ़, बढ़	घटती, चढ़ती, बढ़ती
न	चल, ले-दे, ढक	चलन, लेन,-देन, ढक्कन
नी	कर, भर, चट हो	करनी, भरनी, चटनी, होनी
वना	डर, लुभा, सुहा	डरावना, लुभावना, सुहावना
वाला	आ, पढ़, गा, बोल	आनेवाला, पढ़नेवाला, गानेवाला, बोलनेवाला
सार	मिल	मिलनसार
हार	रख, हो	राखनहार, होनहार
हारा	रख, रो	राखनहारा, रोवनहारा

(ii) तद्धित प्रत्यय

- **संस्कृत के तद्धित प्रत्यय**

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
अ	कुरु, विष्णु, शिव	कौरव, वैष्णव, शैव
आलु	दया, कृपा, श्रद्धा	दयालु, कृपालु, श्रद्धालु
इक	धर्म, दिन, वर्ष	धार्मिक, दैनिक, वार्षिक
इत	आनंद, तरंग, पुष्प	आनंदित तरंगित, पुष्पित
इमा	रक्त, लघु, लाल	रक्तिमा, लघिमा, लालिमा

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
इष्ठ	गुरु, बल, लघु	गरिष्ठ,बलिष्ठ, लघिष्ठ
ई	गुण, पक्ष	गुणी, पक्षी
ईन	कुल, ग्राम	कुलीन, ग्रामीण
ईय	भारत, राष्ट्र, स्वर्ग	भारतीय, राष्ट्रीय, स्वर्गीय
एय	कुन्ती, पुरुष, विनता	कौन्तेय, पौरुषेय, वैनतेय
ता	दीन, लघु, विशेष	दीनता, लघुता, विशेषता
त्व	गुरु, प्रभु, सती	गुरुत्व, प्रभुत्व, सतीत्व
मान	बुद्धि, शक्ति, श्री	बुद्धिमान, शक्तिमान, श्रीमान
य	धीर, पण्डित, मधुर	धैर्य, पाण्डित्य, माधुर्य
वान	गुण, ज्ञान, धन	गुणवान, ज्ञानवान, धनवान

- **हिन्दी / उर्दू के तद्धित प्रत्यय**

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
आ	चूर, भूख, बाबू	चूरा, भूखा, बबुआ
आई	भला, बुरा, चिकना	भलाई, बुराई, चिकनाई
आऊ	उपज, पण्डित	उपजाऊ, पण्डिताऊ
आन	ऊँचा, नीचा, चौड़ा	ऊँचान, निचान, चौड़ान
आना	ठीक, रोज, साल	ठिकाना, रोजाना, सालाना
आर	लोहा, सोना	लुहार, सुनार
आस	खट्टा, मीठा	खटास, मिठास
आहट	कड़वा, चिकना	कड़वाहट, चिकनाहट
इया	खाट, गठरी, लोटा	खटिया, गठरिया, लुटिया
ई	खुश, खेत, चोर	खुशी, खेती, चोरी
ईन	नमक, रंग, शौक	नमकीन, रंगीन, शौकीन
ईला	छवि, रंग, रस	छबीला, रंगीला, रसीला

प्रत्यय	मूलशब्द	कुछ उदाहरण
ऊ	गरज, पेट, बाजार	गरजू, पेटू, बाजारू
एरा	अंध, चाचा, साँप	अंधरा, चचेरा, सपेरा
ऐत	डाका, लाठी	डकैत, लठैत
ओला	साँप, खाट	सँपोला, खटोला
ओं	घंटा,पहरा,तीस,सैकड़ा	घंटों, पहरों, तीसों, सैकड़ों
खाना	कैद, डाक, तोप	कैदखाना, डाकखाना, तोपखाना
खोर	आदमी, रिश्वत, हराम	आदमखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर
गर	जादू, सौदा	जादूगर, सौदागर
गी	ताजा, मर्दना	ताजगी, मर्दानगी
ची	अफीम, तोप, नकल	अफीमची, तोपची, नकलची
दान	कलम, पीक, मच्छर	कलमदान, पीकदान, मच्छरदान
दार	दुकान, मजा, थाना	दुकानदार, मजेदार, थानेदार
नाक	खौफ, दर्द, शर्म	खौफनाक, दर्दनाक, शर्मनाक
पन	पागल, बच्चा, लड़का	पागलपन, बचपन, लड़कपन
पा	पूजा, बूढ़ा, मोटा	पुजापा, बुढ़ापा, मुटापा
बाज	दगा	दगाबाज़
मंद	अकल, जरुरत, दौलत	अकलमंद, जरूरतमंद, दौलतमंद
वार	घण्टा, उम्मीद, भाषा	घण्टेवार, उम्मीदवार, भाषावार
वाला	खिलौना, घर, टोपी	खिलौनेवाला, घरवाला, टोपीवाला
हरा	दो, रूप, सोना	दुहरा (दोहरा) रुपहरा, सुनहरा
हारा	चूड़ी, लकड़ी	चुड़ीहारा, लकड़हारा

भाववाचक संज्ञाओं की रचना

प्रत्ययों का प्रयोग करके संज्ञाएँ एवं विशेषण बनाए जाते हैं। नीचे उनके कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं –

- **जातिवाचक संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ**

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
पुरुष	पौरुष	मनुष्य	मनुष्यता
प्रभु	प्रभुत्व	मित्र	मित्रता
बन्धु	बन्धुत्व	लड़का	लड़कपन
बच्चा	बचपन	शत्रु	शत्रुता

क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
उड़ना	उड़ान	देखना	दिखावा
काटना	कटाई	धोना	धुलाई
खेलना	खेल	धमकाना	धमकी
खोजना	खोज	पहुँचना	पहुँच
गाना	गान	पकड़ना	पकड़
गिनना	गिनती	पहनना	पहनावा
छींकना	छींक	भूलना	भुलावा
देना	देन	लूटना	लूट
दौड़ना	दौड़	हारना	हार
मुस्काना	मुस्कराहट	मिलना	मिलावट

- **विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ**

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
अधिक	अधिकता	पण्डित	पण्डिताई
ओछा	ओछापन	बूढ़ा	बुढ़ापा
ऊँचा	ऊँचाई	बुरा	बुराई
एक	एकता	बेईमान	बेईमानी
कड़वा	कड़वाहट	बुद्धिमान	बुद्धिमत्ता
काला	कालिमा	भला	भलाई
खट्टा	खटास	मधुर	मधुरता / माधुर्य
खुश	खुशी	मीठा	मिठास
गरम	गरमी	मूर्ख	मूर्खता
गरीब	गरीबी	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता
चतुर	चतुराई	लम्बा	लम्बाई
चिकना	चिकनाई	वीर	वीरत्व / वीरता
ज्यादा	ज्यादती	विधवा	वैधव्य
दीन	दीनता	सुन्दर	सौन्दर्य / सुन्दरता
पागल	पागलपन	सरल	सरलता

विशेषणों की रचना

- **संज्ञाओं से विशेषणों की रचना**

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
अन्त	अन्तिम	क्षण	क्षणिक
अंचल	आंचलिक	खेल	खिलाड़ी
अग्नि	आग्नेय	ग्राम	ग्रामीण
अक्ल	अक्लमंद	घर	घरेलू
अवरोध	अवरुद्ध	चाचा	चचेरा
आदर	आदृत / आदरणीय	जहर	जहरीला
आराधना	आराध्य	देश	देशी / देशीय

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
आत्मा	आत्मिक / आत्मीय	नोक	नुकीला
आश्रय	आश्रित	पश्चिम	पश्चिमी /पाश्चात्य
इच्छा	ऐच्छिक	पूजा	पूज्य / पूजनीय
ऋण	ऋणी	प्यास	प्यासा
किताब	किताबी	बर्फ	बर्फीला
कल्पना	कल्पित / काल्पनिक	मंगल	मांगलिक
केन्द्र	केन्द्रित / केन्द्रीय	मेधा	मेधावी
क्रोध	क्रुद्ध	वर्ष	वार्षिक
क्लेश	क्लिष्ट	शक्ति	शाक्त

- **धातुओं (क्रियाओं) से विशेषण**

धातु	विशेषण	धातु	विशेषण
अड़	अड़ियल	भाग	भगोड़ा
कृ	कृत	मिल	मिलनसार
खेल	खिलाड़ी	लभ्	लब्ध
झगड़	झगड़ालू	लुभ्	लुब्ध
टिक	टिकाऊ	लड़	लड़ाका / लड़ैत
तैर	तैराक	लूट	लुटेरा
दा	देय / दत्त	रो	रोवनहारा
दृश्	दर्शनीय	रख	राखनहारा
पढ़	पढ़नेवाला	शुध्	शुद्ध
पी	पियक्कड़	शृ	श्रवणीय
पूज्	पूज्य / पूजनीय	शोष्	शोषित
बढ़	बढ़िया	सुहा	सुहावना, सुहाना
बह	बहता	हँस	हँसोड़

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दो में से मूलशब्द और उपसर्ग अलग-अलग कीजिए :

अनपढ़, अबोध, कपूत, भरपूर, हरदम, प्रतिकूल, संस्कार, प्रचार, अपशब्द, उपदेश, परिक्रमा, अधिपति, बदसूरत, बाकायदा, विज्ञान, बेचैन, उत्थान, निश्चय, नासमझ, निडर

2. निम्नलिखित उपसर्गों का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाइए :

अध, नि, बद्, ला, हर, निर, परा, अनु, उप, अभि

3. निम्नलिखित शब्दों में से मूलशब्द और प्रत्यय अलग-अलग कीजिए :

खाऊ, घुमक्कड़, लुटेरा, लड़ाका, खिलौना, चढ़ाई, बसेरा, बढ़ती, सजावट, घबराहट, गाड़ीवाला, लुहार, मूर्खता, पिछला, प्यासा, मिठास, झूला, थकान, छलनी

4. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों से विशेषण बनाइए :

सप्ताह, स्वर्ग, शरीर, गर्मी, जहर, जाति, खुशी, बुद्धि, क्षुधा, खून

5. निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए :

उड़ना, लड़ना, देखना, हारना, छींकना, झगड़ना, घटना, पकड़ना, दौड़ना, समझना

6. निम्नलिखित कृत प्रत्ययों की सहायता से शब्द बनाइए :

अनीय, आवट, अक्कड़, आलू, इयल, ई, ऊ, एरा, वाला, औती

7. निम्नलिखित तद्धित प्रत्ययों की सहायता से शब्द बनाइए :

इक, ईय, मान, खोर, आहट आई, ईला, वाला, गर, दान, नाक, पन

●